

Str. 5. a. Die Scholien : सुतपात्रे ऽभिषुतस्य सोमस्य पानकर्त्रे । पात्रे ist der Dativ von पावन्, Nom. पावा, Wurzel पा, Affix वन्. S. Pāṇini III. 2. 74. Vgl. Nom. Sg. अभिशस्तिपावा LXXVI. 3., Voc. Sg. सोमपावन् LV. 7., Dat. Sg. दावने LXI. 10. und सुदात्रे LXXVI. 3., Gen. Pl. वातदात्राम् XVII. 4., सक्त्रदात्राम् XVII. 5., सोमपात्राम् XXX. 11. Rosen.

b. पन्ति leitet Rosen fälschlich von पा ab. S. Pāṇini VI. 4. 81. Bopp, kl. Gr. §. 312. — वीतये = भक्षणार्थम्, die Schol.

c. Die Scholien : अक्नीयमानं दधि आशीर्दोषघातकं येषां सोमानां । ते दध्याशिरः । Rosen : i. e. « libamina coagulato lacte purificata ». Eodem sensu usurpatur गवाशिरस्, II. II. §. 1., ubi schol.: गोमिः क्षीरैराशिरो मिश्रिताः संज्ञाताः i. e. « (libamina) lacte coagulato mixta ». Vide quoque usum dictionis समाशिराम् (concoctorum libaminum), h. XXX 2. Vocem आशीः ad r. श्री refert schol. apud Pāṇ. VI. 1. 36. Vgl. jedoch meinen Commentar z. d. St.

Str. 6. c. Die Scholien bei Stev. ज्यैष्ठ्याय देवेषु ज्येष्ठत्वार्थं । सुक्रतु übersetzt Rosen mit « fausta agens ».

Str. 7. a. Die Scholien : आशवः सवनत्रये प्रकृतिविकृत्योर्वा व्याप्तिमत्तः । Vgl zu IV. 7. a.

b. Die Scholien : गीर्भिर्वन्यते सेव्यत इति गिर्वणाः । — Mit langem ई (गीर्वणास्), das man nach den Gesetzen der spätern Sprache erwartet hätte, habe ich dieses Wort nur einmal angetroffen: Sāmav. I. 4. 6. 8.

c. Die Scholien bei Stev. शं सुखरूपाः सोमाः । प्रचेतसे प्रकृष्टज्ञानाय । Rosen : « gaudium tibi sunt sapienti ».

Str. 8. Die Scholien : स्तोमास् = सामगानां स्तोत्राणि, अवीवृधन् (s. Pāṇ. VII. 4. 8) = वर्धितवत्तस्, उक्था (= उक्थानि, Bopp, kl. Gr. §. 143. Anm.) = बह्वचानां शास्त्राणि, वर्धन्तु = वर्धयन्तु.